IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

उमरिया जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की संभावनाएँ

डॉ. संदीप सिंह
शासकीय शिल्फिली कालेज, सूरजपुर, (छ.ग.)

शोध–सारांशः

भारत प्राचीन सभ्यताओं वाला देश है। यहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति प्राचीन काल से ही समृद्ध रही है। यहाँ पर सभी धर्मों, वर्गों, जातियों और विभिन्न भाषा बोलने वाले लोग एक साथ मिलकर रहते हैं, जो एकता एवं शांति का प्रतीक है। हमारे देश में सारे संसार की झलक देखी जा सकती है, इसी कारण क्रेसी महोदय ने इसे उपमहाद्वीप की संज्ञा प्रदान की है। हमारा देश आरंभ से विदेशी पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र रहा है। इस देश में 'अतिथि देवो भवः' की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है।[1] इन्हीं बिन्दुओं की पूर्ति हेतु शोध पत्र में विवेचित करने का प्रयास है।

मुख्य शब्दः उमरिया, पारिस्थितिकी, पर्यटन, ग्रामीण, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, स्थल, विदेशी आध्यात्मिकत संभावनाएँ इत्यादि।

प्रस्तावनाः

आम देशी–विदेशी पर्यटकों को शहरी जीवन शैली पसंद नही आ रही है और वे शोरगुल व प्रदूषण से दूर ग्रामीण एवं पर्यावरणीय पर्यटन की ओर रुख कर रहे है। अब पर्यटन का अभिप्राय बड़े शहरों के ऐतिहासिक स्थल एवं इमारते ही नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों का प्राकृतिक सौन्दर्य, पशु–पक्षी, ग्रामीण क्षेत्रों की लोककलायें, एवं लोक संस्कृति और सांस्कृतिक विरासत को समझना भी शामिल है। हमारे देश के ग्रामीण स्थल दूसरे देशों की तुलना में सस्ते और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है। यहाँ पर हर मौसम में पर्यटन का लुत्फ उठाया जा सकता है। यही कारण है कि सादगी, ईमानदारी, खातिरदारी और खुले दिल से मेहमाननवाजी देखकर पर्यटक अपने आप गाँवो की तरफ खिंचे चले आते हैं। यह भी सच है कि कई विदेशी पर्यटक शांति और आध्यात्मिकता की खोज में भारत आते हैं और यहाँ की संस्कृति को अपनाकर यही रच–बस जाते है ।

आज ग्रामीण धरोहर पर्यटन एक बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहा है।[2] मध्यप्रदेश के पर्वतीय व प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण पर्यटन स्थलों की तरफ सैलानियों के आकर्षण को देखते हुए प्रदेश के दूर–दराज क्षेत्रों में सड़क, बिजली, पानी और संचार के साधनों का तेजी से विकास किया जा रहा है, जो भारत निर्माण का जीता जागता उदाहरण है। विदेशी पर्यटकों के आकर्षण के कारण कुटीर उद्योग हस्तकला उद्योग, काशीदाकारी व दस्तकारी के परम्परागत कारोबार को पुनः बढ़ावा मिल रहा है, जिससे गाँवों में नये रोजगारों का सृजन हो रहा है। इस वैकल्पिक रोजगारों के कारण सूखे व बाढ़ जैसी आपदाओं से निराश कामागारों व श्रमिकों का शहरो की ओर पलायन रुकेगा और गाँव सम्पन्न होंगे।

प्रतिवर्ष विदेशी पर्यटकों की बढ़ती संख्या श्अतुल्य भारतश की सफलता का सूचक है। गाँवों की परम्पराओं के अनुसार विभिन्न मेलों और उत्सवों का आयोजन भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने प्राचीन झीलों, पोखरों, तालाबों, झरनों, स्मारकों, हवेलियों, बावड़ियों, गुफाओं, किलों, मंदिरों मस्जिदो के संरक्षण पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। लेकिन इसके लिये ग्रामीण पर्यटन के विकास के नाम पर गाँवों की सादगी, संस्कृति, परम्पराओं रीति–रिवाजों व इनके मूल स्वरूप से छेड़छाड़ न की जाए यह हमें सुनिश्चित करना होगा। इसके साथ विदेशी आगन्तुओं के साथ होने वाले शोषण, अभद्र व्यवहार, ठगी व अन्य आपराधिक घटनाओं को रोकने के लिये सख्त कानून की आवश्यकता से इंकार नहीं किया

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

जा सकता है। हमें आतंकवाद एवं नक्सलवाद जैसी चुनौतियों का भी सामना करना होगा जिससे विदेशी पर्यटकों का विश्वास अर्जित किया जा सके और उन्हें एक भय और शोषण से मुक्त वातावरण प्रदान किया जा सके। इन सबके अभाव में ग्रामीण धरोहर एवं पारिस्थितिकी पर्यटन की कल्पना निरर्थक है।

अध्ययन क्षेत्रः

उमरिया जिला मध्यप्रदेश राज्य का नव सृजित जिला है। यह जिला वर्ष 2000 तक शहडोल जिले का भाग था। वर्ष 2000 में शहडोल जिले की तीन तहसीलों मानपुर, करकेली तथा पाली को विभक्त कर उमरिया जिले का गठन किया गया । यह जिला वर्तमान में शहडोल संभाग का एक जिला है। म.प्र. राज्य के दक्षिणी पूर्वी भाग में स्थित उमरिया जिला कोयले की भूमिगत खदानों एवं बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान के लिये ख्यातिलब्ध है। इस जिले की भौगोलिक स्थिति 23°12 उत्तरी अक्षांश से 24°2′ उत्तरी अक्षांश तक एवं 80°–3′ पूर्वी देशान्तर से 81°–30 पूर्वी देशान्तर के मध्य है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4076 वर्ग किमी. है। वर्ष 2011 में जिले की कुल जनसंख्या 643579 थी जिसमें से 329527 पुरूष एवं 314052 महिलाएँ थी। जिले का लिंगानुपात 953/1000 है जो 2001 में 946/1000 था। जिले का जनसंख्या घनत्व 158 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है जो राज्य के जनघनत्व 236 की तुलना में काफी कम है।

उमरिया जिले की सापेक्षिक स्थिति पूर्वी म.प्र. है। जिले के उत्तरी भाग में सतना एवं सीधी जिला स्थित है। उमरिया जिले के पूर्वी भाग में शहडोल जिला एवं पश्चिम में कटनी जिला स्थित है। इस जिले के दक्षिणी भाग में डिण्डोरी एवं जबलपुर जिला स्थित है। उमरिया जिले की पर्यटन की दृष्टि से स्थिति अनुकूल है। जिले में स्थित बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान वन्य जीवों का खजाना है। इस उद्यान का टाइगर शो पूरे देश में विख्यात है। जिले की मानपुर तहसील में बांधवगढ़ दुर्ग, शेष शैया विष्णु की प्रतिमा एवं असंख्य प्राकृतिक गुफायें पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। उमरिया जिले के आस–पास कई प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों का होना भी इसकी स्थित को चार–चाँद लगा रहा है। जिले के चारों ओर भेड़ाघाट, अमरकंटक, खजुराहो, रानी दुर्गावती अभ्यारण्य, संजय गाँधी राष्ट्रीय उद्यान, पन्ना राष्ट्रीय उद्यान, चित्रकूट, मैहर, रीवा का बाघेला म्यूजियम, रीवा की प्रपात रेखा एवं बाणसागर बाँध में नित–प्रतिदिन पर्यटकों का आना–जाना बना रहता है। उपरोक्त समीपी आकर्षणों के साथ–साथ जिले में ग्रामीण धरोहर एवं वन्य जीवों पर आधारित पारिस्थितिकी पर्यटन विकास की अथाह संभावनायें है। इन संभावनाओं एवं उनके विकास में आने वाली समस्याओं का पता लगाना अध्ययन की विषय वस्तु या क्षेत्र।

पारिस्थितिकी पर्यटन का परिचय

समग्र रूप में पर्यटन देश का दूसरा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा का स्रोत है। वर्ष 2007 में दिसम्बर तक 1 करोड़ 20 लाख की तुलना में अमरीकी डालर के रूप में सरकार को विदेश मुद्रा प्राप्त हुई जो वर्ष 2006 की तुलना में 4 प्रतिशत अधिक है।[3] पूरी दुनिया की तरह भारत सरकार को भी पर्यटन की अथाह अलौकिक क्षमता का एहसास हो गया है। अब भारत सरकार भी पर्यटन उद्योग को विकास की राह में मील का पत्थर मानने लगी है। आज भारत सहित अनके राष्ट्रों में पारिस्थितिकी पर्यटन की अवधारणा को काफी बल मिला है।[4]

पारिस्थितिकी पर्यटन (Eco&Tourism) से आशय पर्यावरण पर्यटन से है, इसके तहत पर्यटन का प्रबंधन तथा प्रकृति का संरक्षण इस तरीके से करना होता है कि एक तरफ पर्यटन व पारिस्थितिकी की आवश्यकताओं के बीच सन्तुलन बना रहे तो दूसरी तरफ स्थानीय समुदायों को रोजगार की जरूरतों की पूर्ति होती रहे।[5] दरअसल पारिस्थितिकी पर्यटन के जरिए ही अब पर्यटन उद्योग के महती आधार के रूप में प्राकृतिक विरासत को न केवल बचाया जा सकता है बल्कि दीर्घावधि जैव विविधता

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

संरक्षण उपायों और स्थानीय सामाजिक तथा आर्थिक विकास के बीच संबंध भी कायम रखा जा सकता है।[7] केन्द्र सरकार ने पर्यटन उद्योग एवं गैर सरकारी संगठनों आदि के परामर्श से देश में वर्ष 1998 में ही पारिस्थितिकी और पर्यटन नीति और दिशा निर्देश तय कर दिये थे।[6] इस नीति का उद्देश्य हमारे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, सुरक्षा और इन्हें समृद्ध बनाना तथा पर्यावरणीय संरक्षण एवं समुदाय विकास के सकारात्मक प्रभावों के साथ पारिस्थितिकी पर्यटन की विनियमित वृद्धि सुनिश्चित करना रहा है। हाल के वर्ष में देश में निरन्तर बढ़ती जनसंख्या और स्थानीय निर्वाह के लिए प्राकृतिक स्थलों पर संसाधनों के निरन्तर घटते आधार से पहले से ही कमजोर पर्यावरण का निरन्तर ह्रास हो रहा है। विभिन्न प्रकार की आर्थिक क्रियाओं, खनन, कृषि, उद्योग आदि की वृद्धि के फलस्वरूप वनों का आकार तेजी से सिकुड़ता जा रहा है, इसी का परिणाम है कि प्रकृति का संतुलन भी निरन्तर गड़बड़ाता जा रहा है। इस संतुलन को बनाये रखने में पारिस्थितिकी पर्यटन[8] की अहम् भूमिका हो सकती है।

भारत दुनिया के उन सात जैव–विविधता सम्पन्न देशों में से एक है, जहाँ की प्राकृतिक व सांस्कृतिक विरासत अत्यधिक समृद्ध है। इस दृष्टि से प्रकृति और संरक्षण को ध्यान में रखने वाले पारिस्थितिकी पर्यटन को सभी स्तरों पर अपनाना जरूरी है। पारिस्थितिकी पर्यटन दरअसल पर्यटन उद्योग के पूर्ण एकीकरण को मान्यता प्रदान करता है ताकि यात्रा और पर्यटन लोगों की आय का स्रोत बने व स्थानीय लोग भी पृथ्वी की पारिस्थितिकी प्रणाली के संरक्षण, सुरक्षा और बहाली में योगदान करें। ऐसे पर्यटन के विकास से पर्यावरण संरक्षण पर्यटन का एक महत्वपूर्ण अंग बन जाता है। इसे इस रूप में समझें कि पारिस्थितिकी पर्यटन की अवधारणा का विकास करने से पर्यटकों को प्रेरणात्मक और भावनात्मक संतुष्टि प्राप्त होती है क्योंकि इसका लक्ष्य वन्य जीवों और पर्यावरण को लाभ पहुंचाना है। इस रूप में ऐसा पर्यटन प्रकृति व संस्कृति के संरक्षण के प्रति पर्यटकों को जागरुक करता है, जिसकी आज महती आवश्यकता है।

पारिस्थितिकी पर्यटन की प्रकृति

पारिस्थितिकी पर्यटन की अवधारणा आधुनिक विज्ञान की देन है। भारतीय मनीषियों ने इस अवधारणा का मूल्यांकन हजारों वर्ष पूर्व ही किया था। 'प्रकृति' और श्जीवश के अन्तर्सम्बन्धों को जन–जन तक बोध कराने के लिए विविध प्रतीकों के रूप में इन्हें धर्म, सामाजिक नियम और आचरण में समाहित कर दिया था। समुच्च रूप में इसे विहंग योग कहा गया जो प्रकृति और जीवों के अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या करता है। यही कारण है कि प्रकृति और मानव का मित्रवत संबंध हजारों वर्षों तक चलता रहा लेकिन आधुनिकता के आवेग में पुरानी परम्परा और आचरण को नकार दिया गया क्योंकि प्रकृति पर विजय की अभिलाषा में भौतिक सुख जीवन का आधार बन गया, इससे प्रकृति और जीव के संबंध बिगड़ने लगे और बाध्य होकर 'औद्योगिक मानव' को सोचना पड़ा कि ऐसा क्यों घटित हो रहा है।

आधुनिकीकरण एवं विज्ञान के बढ़ते प्रभाव, वैज्ञानिक उपलब्धियों और तकनीकी विकास जनित भौतिक सुख की दौड़ में यह अवधारणा बनने वाली कि मनुष्य ने प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है। मानव अपनी इच्छानुसार आचरण एवं परिवर्तन करने लगा, जिसका दुष्परिणाम सुरसा के मुँह की भाँति फैलता नजर आने लगा। पारिस्थितिकी संकट से ग्रस्त मानव में पुनः प्रकृति की ओर चलो का नारा देते हुए श्औद्योगिक मानवश के साथ–साथ 'प्राकृतिक मानव' बनने को सोचने लगा।

पर्यावरणीय संकट की इस घड़ी में विकास की जो भी क्रियाएं संचालित थी उनमें से अधिकांश क्रियाएं पारिस्थितिकी संकट को जन्म दे रही थी। ऐसे स्थिति में कुछ ऐसी विकास क्रियाओं की ओर लोगो ने सोचा जिससे पर्यावरण नष्ट होने से बचे, उनमें एक नई विकास की क्रिया की पहचान की गई है, जिसे श्पारिस्थितिकी पर्यटन के नाम से जाना जाता है। पारिस्थितिकी के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि यह विज्ञान की वह शाखा है जिसमें एक ओर जीवों के जैविक एवं अजैविक पर्यावरण और दूसरी ओर जीवों के पारस्परिक क्रिया, पारस्परिक अर्न्तसंबंध तथा परस्पर अन्योन्याश्रित संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

पारिस्थितिकी पर्यटन की संकल्पना

पारिस्थितिकी के अन्तर्गत जैव–जगत और उसके निकटवर्ती पर्यावरण के अर्न्तसम्बन्धों की व्याख्या जीवों पर वहाँ के निकटवर्ती पर्यावरण के प्रभावी कारकों के सन्दर्भ में अध्ययन किया जाता है। वास्तव में इकोलाजी शब्द का प्रयोग तो बहुत बाद में किया गया उसके पूर्व से ही पारिस्थितिकी अध्ययन या ज्ञान पर बल दिया जाता रहा है। इसका उल्लेख हमें हिप्पोक्रेटीज, अरस्तू तथा ग्रीक दार्शनिकों के लेख में मिलता है। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में अरस्तू के मित्र थीयोफ्रेस्ट्स जीवों एवं पर्यावरण के परस्पर सम्बन्धों का वर्णन संभवतः सर्वप्रथम किया था ।[9] इस दृष्टि से थीयोफ्रेस्ट्स को विश्व का प्रथम पारिस्थितिकी विज्ञान का पितामह माना जा सकता है।[10] 'इकोलाजी' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम जर्मन जीव–वैज्ञानिक 'हैकेल' ने 1869 में किया था।[11]

Ecology शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द Oekologie से हुई है जो शब्द Oikos + Logos से मिलकर बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ आवास या गृह तथा अध्ययन होता है।[12] संयुक्त रूप से इसका आशय पृथ्वी रूपी गृह की उन समस्त सामग्री का अध्ययन करना है, जिसमें जीवों का उद्‌भव एवं विकास हुआ है, तथा उस वातावरण के प्रभाव की व्याख्या पारिस्थितिकी शास्त्र में की जाती है। प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता टेलर[13] (1946) का मानना है कि 'पारिस्थितिकी विज्ञान समस्त जीवों का पर्यावरण के साथ समस्त सम्बन्धों के अध्ययन का विज्ञान है। संक्षेप में हम कह सकते है कि "जीवों का अपने पर्यावरण के प्रति अनुकूलन का अध्ययन पारिस्थितिकी है।"[14] इस तरह पारिस्थितिकी अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत वनस्पति, प्राणी तथा मानव के स्वरूपों में किसी क्षेत्र में कार्यरत भौतिक बलों के प्रभावों को सम्मिलित किया जाता है। इसीलिए इसे तीन शाखाओं में विभक्त किया गया है। प्रथम शाखा पादप पारिस्थितिकी, द्वितीय शाखा प्राणी पारिस्थितिकी एवं तृतीय शाखा में मानव पारिस्थितिकी का अध्ययन किया जाता है।[15] मानव व पर्यावरण के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन मानव पारिस्थितिकी में किया जाता है। मनुष्य जिस समाज, जिस परिवेश में जीता है, वही उसका पर्यावरण है। हवा, पानी, मिट्टी पेड़–पौधों से लेकर समस्त प्रकार के जीव–जन्तु, पशु–पक्षी, नदी, पहाड़, जलवायु, मौसम, खनिज के लिए इसमें स्थान है। इस दृष्टि से यह कह सकते हैं, कि मानव के चारों ओर जो कुछ भी है वह उसकी पारिस्थितिकी के तत्व या घटक है। इन घटकों को प्राकृतिक घटक या तत्व के नाम से जाना जाता है। ये सब प्राकृतिक पारिस्थितिकी के अंग है। प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी 'मानव' को माना जाता है, क्योंकि मानव की–तमाम श्रेष्ठता के पीछे उसका बुद्धि बल है। मानव अपने बुद्धि बल का प्रयोग कर प्राकृतिक वातावरण में परिर्वतन या अनुकूलन कर एक नये वातावरण को सृजित करता है जिसे हम सांस्कृतिक पारिस्थितिकी के तत्व या घटक के नाम से जानते हैं। इसके अन्तर्गत मानवीय बस्तियाँ, आवास, परिवहन, पहनावा, खान–पान, खेत, खलिहान, बाग–बगीचे, उद्यान, धर्म, प्रथा, रीति–रिवाज, स्वास्थ्य, जड़ी–बूटी, देवता–पूजा, वृक्ष पूजा, नाच, गायन, वाद्य सब कुछ सम्मिलित है ।

पारिस्थितिकी के उपरोक्त सभी घटक किसी न किसी रूप में मानव को सुख, शान्ति, अवकाश बिताने, स्वस्थ रहने, मनोरंजन देने आदि में सहायक है। उपरोक्त समस्त क्रियायें पर्यटन से संबंधित है। इस दृष्टि से पारिस्थितिकी तंत्र एवं पर्यटन का संबंध स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है ।

पर्यटन का सामान्य अर्थ सुविधानुसार या अवकाश के क्षणों में दृश्य सौन्दर्य स्थल या रूपों का थोड़े समय के लिए भ्रमण करना है।[16] मानव स्वभाव से जिज्ञासु होता है, तथा अपनी इस जिज्ञासा की पूर्ति हेतु वह न केवल अपने दायरे या देश तक सीमित रहता है, बल्कि उसे बाहर देखने या परखने की लालसा बनी रहती है जो उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इसी लालसा एवं स्वाभाविक प्रवृत्ति का प्रतिफल अर्थात क्रियात्मक रूप है 'पर्यटन'।[17]

आदिम जनजीवन पर आधारित

पारिस्थितिकी पर्यटन में पर्यटन और प्रकृति संरक्षण के प्रबंध को शामिल करते हैं। एक तरफ पर्यटन और पारिस्थितिकी की आवश्यकतायें पूरी की जायें और दूसरी ओर स्थानीय समुदाय के लोगों के रोजगार, नये कौशल आय और महिलाओं के लिए

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

बेहतर स्तर सुनिश्चित किया जाय। पारिस्थितिकी पर्यटन में अधिकतम आर्थिक पर्यावरणीय और सामाजिक लाभ भी प्राप्त किये जाते हैं। पारिस्थितिकी पर्यटन को यदि आर्थिक रूप से देखा जाये तो समें भारी मात्रा में राजस्व भी मिलता है, और पारिस्थितिकी प्रणाली को कोई नुकसान पहुचाये बिना वन संसाधनों का दोहन भी किया जा सकता है। पारिस्थितिकी पर्यटन के अन्तर्गत अपेक्षाकृत अबाधित प्राकृतिक क्षेत्रों की ऐसी यात्रा शामिल है जिसमें निर्दिष्ट लक्ष्य प्रकृति का अध्ययन और समादर करना तथा वनस्पति और जीव जन्तुओं के दर्शन का लाभ उठाना और साथ ही इन क्षेत्रों से संबद्ध सांस्कृतिक पहलुओं का अध्ययन शामिल है। पर्यटन एवं पारिस्थितिकी एवं पर्यटन का घनिष्ठ संबंध है रोमांचकारी परिदृश्य, प्राकृतिक सौन्दर्य और सुरम्य स्थलों जैसे सुन्दर समुद्र तट, झिलमिलाती झीलें व झरने, ऊँचे पर्वत की चोटियाँ आदि अनन्त काल से प्रकृति प्रेमी पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र रहे है। मध्यप्रदेश स्थित उमरिया जिला वन्य जीव विविधता से परिपूर्ण है। यहाँ की जलवायु वनस्पतियाँ, जीव–जन्तु, पहाड़, नदी–नाले, सुरम्य प्रपात आदि उपलब्ध हैं, इसलिए इसे पर्यटकों के लिए स्वर्ग कहा जाता है। यहाँ ट्रैकिंग के लिए ऊँची पहाड़ियाँ नौकायन के लिए विशाल नदियाँ, जीव जन्तुओं का अवलोकन करने के लिए उद्यान हैं, आकर्षक प्रपात एवं सुरम्य झरनों सहित अनेक मंदिर, उत्कृष्ट शिक्षा और कलात्मकता से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते है। यहाँ स्मारकों, पुरानी इमारतों के अवशेष, प्राचीन नगर, किले, मकबरे, राजमहल आदि भी पर्यटकों में रोमांच पैदा करते हैं। यदि हमें पारिस्थितिकी पर्यटन को बढ़ाना है और पर्यटकों को आकर्षित करना है तो हमें जिले की पारिस्थितिकी को सन्तुलित बनाना होगा।

पर्यटन के आज विभिन्न रूप देखने को मिल रहे है किन्तु उन तमाम रूपों में सर्वाधिक महत्व पारिस्थितिकी पर्यटन (Eco&Tourism) को दिया जा रहा है। उसका मूल कारण आज दुनिया के तमाम विकसित एवं विकासशील देश पारिस्थितिकी संकट की समस्या से जूझ रहे है। ऐसे समय में संविकास की अवधारणा (Concept of Sustainabule Development) पर आधारित पारिस्थितिकी पर्यटन का विकास एक प्रकाश की किरण के रूप में दिखाई दे रहा है। यही कारण है कि आज दुनिया के वे देश जो पर्यटन में अग्रणी हैं उन देशों में पारिस्थितिकी पर्यटन, आयुर्वेद पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, उद्यान पर्यटन, वन्य जीव पर्यटन आदि को बढ़ावा दिया जा रहा है। उमरिया जिले में भी पर्यटन विकासशील अवस्था में है और यहाँ पारिस्थितिकी पर्यटन विकास की अपार संभावनायें है। अतः इस दिशा में योजनाकारों, बुद्धिजीवियों, पर्यावरण प्रेमियों, पर्यटन सलाहकारों को सोचने को बाध्य किया है।

ग्रामीणः

ग्रामीण धरोहर पर्यटन की इस नवीन अवधारणा से अभिप्राय यह है कि पर्यटक या सैलानी शहरों की भव्य इमारतों, ऐतिहासिक स्मारकों, समुद्र तटों, पर्वतीय स्थलों और मनोरम वन प्रदेशों के साथ–साथ देश के ग्रामीण अंचलों की प्राकृतिक छटा और जनजीवन का अनुभव और आनन्द प्राप्त कर सकें। हमारा देश गाँवों का देश माना जाता है, जहाँ शिल्प, संस्कृति और कला का ऐसा अदभुत खजाना बिखरा में पड़ा है, जो पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम है। हमारे गाँव शहरों की तुलना पिछड़े है। गाँव शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, संचार और उद्योगों की दृष्टि से पिछड़े हैं। परिणामस्वरूप जनसंख्या का पलायन नगरों की ओर हो रहा है, नगरों का पर्यावरण लगातार प्रदूषित हो रहा है। ग्रामीण पर्यटन ग्रामीण विकास की कोई विशाल योजना का अंग नहीं है किन्तु परोक्ष रूप से गाँवों के उत्थान और नगरीकरण की इस प्रवृत्ति में लगाम लगा सकता है, ग्रामीण लोगो के शहरी पलायन पर रोक लगाने का साधन बन सकता है। इस क्रिया–कलाप द्वारा जहाँ गांवों में आधारभूत बुनियादी सुविधाओं का विकास होगा, स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा, गाँवों की सुख समृद्धि में वृद्धि होगी वहीं पर्यावरण भी संरक्षित होगा। ग्रामीण धरोहर पर्यटन की गाड़ी आगे बढ़ने से गाँवों के असंख्य कलाकारों, शिल्पकारों को अपने कौशल की अभिव्यक्ति के अवसर मिलेंगे साथ ही उसका मूल्य भी उन्हें मिलेगा। गाँवों में पड़े पुराने दुर्ग, भवन, बावड़ियाँ, महल, झीलों, हवेलियों, वनों, उद्यानों को पर्यटन से

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

जोड़कर जहाँ ग्रामीण सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण होगा वहीं इन्हें होटल या मोटल का रूप देकर गाँवों के लोगों को रोजगार के साथ–साथ उनके स्वाभिमान और आत्मगौरव को भी बढ़ाने में मदद मिलेगी।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पर्यटन एवं पारिथितिकी योजना के स्तर पर ग्रामीण धरोहर पर्यटन का सपना जितना सुखद और सरल लगता है कार्यान्वयन के स्तर पर उतना ही चुनौतीपूर्ण तथा कठिन है। इनके विकास के लिये तीन स्तरों पर प्रयास अपेक्षित है। प्रथम स्तर पर गाँवों में बुनियादी सुविधाओं का विकास, द्वितीय स्तर पर गाँवों की प्राकृतिक व सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण एवं तृतीय स्तर पर ग्रामीण पर्यटन के विकास की गतिविधियों के संचालन में समुचित तालमेल और संतुलन को स्थापित करने का मुख्य प्रयास है पर्यटन के कारण स्थानीय लोगों को रोजगार प्राप्त करने में मदद मिली है जिससे उनका आर्थिक जीवन–सतर में सुधार हुआ है। अतएव ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने की विशेष आवश्यकता है। जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार आसानी से उपलब्ध हो सके।

संदर्भ

[1]. सिंह बी.पी. एवं सिंह सुमन्त (2000) मध्यप्रदेश में पर्यटन, आदित्य प्रकाशन बीना, पेज–2
[2]. पटेल, डॉ. सुधीश कुमार, पर्यटन उद्योग का बदलता चेहरा, कुरूक्षेत्र, वर्ष, 54 अंक–7 मई 2008 पृष्ठ 12
[3]. पाण्डे, गिरीश चन्दा, अतुल्य भारत में ग्रामीण पर्यटन, कुरूक्षेत्र, वर्ष, 54, अंकद्7 मई 2008 पृष्ठ 1
[4]. सिंह सतेन्द्र, पन्ना जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएँ, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा पेज–2
[5]. पटेल, डॉ. सुधीश कुमार, पर्यटन उद्योग का बदलता चेहरा, कुरूक्षेत्र, वर्ष 54, अंक–7 मई 2008 पृष्ठ–12
[6]. कोरी, राजबहादुर (2006)बघेलखंड में पारिस्थितिकी पर्यटन, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध, अवधेशप्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा।
[7]. सिंह सतेन्द्र, पन्ना जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएँ, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा–4
[8]. सिंह सतेन्द्र, पन्ना जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएँ, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा पेज–5
[9]. अवस्थी एन.एम. एवं तिवारी, आर.पी. (1995) पर्यावरण भूगोल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ–161
[10]. अवस्थी एन. एम. एवं तिवारी, आर.पी. (1995) पर्यावरण भूगोल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ–161
[11]. सिंह, नारायण (1993) पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी के मूलतत्व तारा बुक एजेंसी वाराणसी पृष्ठद्31 12 सिंह, नारायण (1993) पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी के मूलतत्व तारा बुक एजेंसी वाराणसी पृष्ठ–31
[12]. Toylor E.B. (1946) Anthropolgy, Volume Ist and IInd, Thin Kers Library, Watts and Co-London.
[13]. कोचर, पी.एल. (1983) पादप पारिस्थितिकी, रतन प्रकाशन, मंदिर इन्दौर
[14]. Bharadwaj, S.M. (1973) Hindu places of Pilgrimage in India, Thompson Press Ltd. Delhi.
[15]. Dattar, B.N- (1981) Himalayan Pilgrimages, Publication Division New Delhi.
[16]. Kaur, J. (1979) Bibiographical sources for Himalayan pilgrimages and Tourism studies in uttarakhand, Tourism recreation research Journal, Lucknow, vol. IV No. 01